आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये, हाँ जी हाँ! हम आये आये।
पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये।टेक।।

जन्म-मरण नित करते करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये।।१।।

भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये।।२।।

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
पंकज की प्रभु यही वीनती, चरण-शरण मिल जाये।।३।।